फिक्शन स्टोरी बुक्स बच्चों को ले जाती हैं अलग ही वर्ल्ड में ...

इंटरनेशनल चिल्ड्रन्स बुक-डे एक्सपर्ट का कहना है कि पेरेंट्स से ही बच्चों में आती है किताबें पढ़ने की रुचि, टाउन हॉल में है बाल पुस्तकालय

सिटी रिपोर्टर, जबलपुर। दादी-नानी की कहानियों से लेकर चाचा चौधरी के कारनामे बच्चों को खूब हँसाया करते थे। तेनाली राम की चतुराई, तो अकबर-बीरबल की कहानियाँ भी रोचक लगती थीं। बचपन में गर्मियों की छुट्टियों में अक्सर हाथों में कॉमिक्स हुआ करती लेकिन अब वो दौर कम ही देखने को मिलता है। आज इंटरनेशनल चिल्ड्रन्स बुक-डे पर एक्सपर्ट ने बताया कि मदर-फादर को देखकर ही बच्चा किताबें पढ़ना आसानी से सीखता है। बच्चों को हिस्टोरिकल, फिक्शन और लेजेंडरी लीडर्स की बुक्स पढ़ने की हैबिट डालनी चाहिए। वहीं पेरेंट्स ने बताया कि छोटे बच्चों के एग्जाम हो चुके हैं तो उन्हें बुक रीडिंग की हैबिट के लिए रोजाना 1 घंटा देना है। शहर के टाउन हॉल स्थित बाल पुस्तकालय में भी बच्चों की पुस्तकों का संसार है। (आर-1)

हम एक साथ पढ़ते हैं बुक्स

विजय नगर निवासी रेखा चतुर्वेदी ने बताया कि बेटी शांभवी को किताबें पढ़ना पसंद है। वो इस वर्ष कक्षा 10वीं में जाएगी। किताबें पढ़ने का शौक उसमें हमसे ही आया है। हम एक साथ नॉवेल पढ़ते हैं। शांभवी ने बताया कि उसे फिक्शन बुक्स पढ़ना काफी पसंद है। जिसमें हैरी पॉटर फेवरेट है, इस स्टोरी में अलग ही दुनिया दिखाई गई है, जो काफी प्रभावित करती है।

मदर-फादर को देखकर ही सीखता है बच्चा

• कहते हैं न कि जो पेरेंट्स करते हैं उसे ही बच्चा कॉपी करना शुरू करता है। बचपन में पापा की तरह बेटा बोलना या दिखना चाहता है तो वहीं माँ से प्रभावित होकर ही बेटी मेकअप करना शुरू कर देती है। वैसे ही अगर पेरेंट्स किताबें पढ़ते हैं तो बच्चा भी इस हैबिट को आसानी से अडॉप्ट कर लेता है। छोटी सी उम्र में ही बच्चों को स्टोरीज पढ़कर सुनानी चाहिए क्योंकि 3 से 4 साल के बच्चों का ब्रेन काफी तेजी से डेवलप होता है। उनमें स्टोरेज क्षमता भी काफी होती है। यह कहना है मनोविशेषज्ञ पायल चौरसिया का, उन्होंने बताया बच्चों में किताब पढ़ने की रुचि पैदा करनी है तो कलरफुल पिक्चर्स वाली बुक्स लाकर दें। पी-3

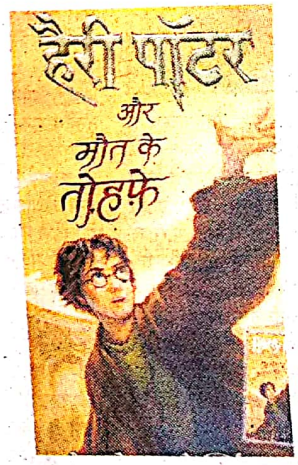

यहाँ मिलेगा बाल साहित्य का भंडार

टाउन हॉल प्रभारी सतीश चौरसिया ने बताया कि अभी तो पुस्तकालय खुलने की कोई गाइडलाइन नहीं आई है लेकिन बच्चों के लिए लगभग 4000 पुस्तकें हैं। जिसमें कॉमिक्स में चाचा चौधरी, अकबर-बीरबल की कहानियाँ, वहीं मुंशी प्रेमचंद की कहानियों के साथ महापुरुषों पर आधारित किताबें भी मौजूद हैं। समय के साथ-साथ नई-नई कॉमिक्स बुलवाई भी जाती हैं।

शिक्षाप्रद मनपसंद कहानियां

3 से 4 साल के बच्चों में जानने की उत्सुकता खूब देखने को मिलती है, जैसे चंदामामा कहाँ रहते हैं? सूरज गर्म क्यों रहता है? इसलिए अगर बच्चों को पेरेंट्स रोचक और नॉलेज वाली किताबें पढ़कर सुनाएँगे, तो उनकी जिज्ञासा का समाधान होगा और उनमें पढ़ने की रुचि भी आएगी।

10-12 साल के बच्चे किसी भी चीज से जल्दी अटैच होना शुरू हो जाते हैं, इसलिए इन्हें एक्टिविटीज से रिलेटेड बुक्स पढ़ने की हैबिट डलवानी चाहिए। ड्रीम्स को अचीव कर सकें तो मोटिवेशनल स्टोरी बुक्स भी बेस्ट ऑप्शन है।

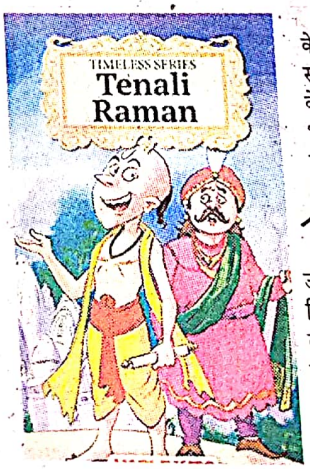

18 साल ऐसी उम्र होती है जब बच्चा खुद अपने टेस्ट के हिसाब से बुक्स को चुनने में सक्षम हो जाता है। वो मोटीवेशनल के साथ उद्यमिता से जुड़ी पुस्तकें भी पढ़ता है जिससे उसे रोजगार के नए-नए आयाम के रास्ते दिखते हैं।

13 से 14 साल के बच्चे यानी टीनएज में एंटर करने वाली उम्र होती है इसमें बच्चों में कैरेक्टर बिल्डिंग करने की क्षमता बढ़ती है तो उन्हें महान कवियों, लेखकों और शहीदों पर आधारित पुस्तकें पढ़नी चाहिए। विज्ञान, भूगोल से जुड़ी किताबें भी पढ़ें, ताकि मन में आने वाले सवालों का हल भी मिल सके। वैज्ञानिक एपीजे अब्दुल कलाम की किताबें जैसे टर्निंग प्वॉइंट्स, इग्नाइटेड माइंडस आदि शामिल हैं।

Scanned with CamScanner